04 संत रविदास

इस अध्याय में हम पढ़ेंगे-

- जीवन परिचय
- संत रविदास की सामाजिक चेतना
- संत रविदास के दार्शनिक विचार
- संत रविदास की भक्ति-भावना के विभिन्न आयाम
- संत रविदास के नैतिक विचार
- संत रविदास के विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता
- रविदासिया समुदाय
- **स्मरणीय तथ्य**
- **संभावित प्रश्न**

संत रविदास 15वीं शताब्दी के प्रसिद्ध **भक्तिकालीन संत** कवि हैं। रविदास एक महान संत होने के साथ-साथ **समाज-सुधारक, दर्शनशास्त्री, कवि** और **ईश्वर के अनुयायी** थे। इन्होंने अपने पदों व रचनाओं के माध्यम से समाज में जातिगत भेदभाव, ऊँच-नीच आधारित भेदभाव का पुरजोर खंडन किया। इसके अलावा, उन्होंने ईश्वर भक्ति का मार्ग दिखलाकर समाज को आध्यात्मिक शिक्षा भी दी।

वस्तुत: स्वामी रामानंद के बारह प्रमुख एवं प्रिय शिष्यों में कबीरदास, रविदास, गुरुनानक देव, नामदेव आदि संत कवियों के नाम महत्त्वपूर्ण हैं। इन संतों ने जाति-पाति, धर्म, नस्ल, रंग-भेद से ऊपर उठकर जो विचारधारा स्पष्ट की है वह किसी राज्य एवं देश की सीमाओं से परे विश्व-कल्याण की बात करती है। इन संतों में रविदास निम्न जाति से संबंधित थे, लेकिन उनकी वाणी एवं विचारधारा मानव जाति के लिए अमृत के समान है, जिसका प्रभाव तत्कालीन भारतीय समाज, धर्म, संस्कृति, राजनीति पर गहरे रूप में देखने को मिलता है।

संत रविदास : जीवन परिचय

- **जन्म**- 15वीं शताब्दी
- **स्थान**- उत्तरप्रदेश के वाराणसी (काशी) जिले के 'गोवर्धनपुर' गाँव में।
- **मुख्य नाम**- रविदास
- **अन्य प्रचलित नाम**- रैदास, संत शिरोमणि, रईदास, रयिदास, रवि, रूहिदास, रामदास, रूद्रदास आदि।
- **पिता का नाम**- संतोखदास (रग्घु)
- **माता का नाम**- कर्मा देवी (कलसा)
- **गुरु**- स्वामी रामानंद
- **मृत्यु**- 1528 ई.
- **विशेष**- भक्तिकालीन संत कवि, समाज-सुधारक, दार्शनिक, ईश्वर-भक्त।
- **भाषा**- संत रविदास की रचनाओं की प्रमुख भाषा ब्रजभाषा थी, किंतु उन्होंने अवधी, राजस्थानी, खड़ीबोली, उर्दू एवं फारसी भाषा के सम्मिश्रण से भी कुछ पदों की रचना की।
- **रचनाएँ**- संत रविदास की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं-
  - **रविदास की बानी**- यह गुरुग्रंथ साहिब में संकलित उनके भजनों और पदों का संग्रह है।
  - **रविदास की वाणी**- इसमें उनके भक्ति और समाज संबंधी उपदेश संकलित हैं।
  - **संत रविदास के पद**- संत रविदास द्वारा रचित पदों का संग्रह, जिसमें उनके भक्ति एवं सुधारवादी दृष्टिकोण का वर्णन है।

संत रविदास की सामाजिक चेतना

संत रविदास का मध्ययुगीन महान संत परंपरा में एक विशिष्ट स्थान है। उनके जीवनकाल की सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक परिस्थितियाँ अत्यंत विचारणीय थीं। समाज विभिन्न जातियों व धर्मों में बँटा हुआ था। विभिन्न धार्मिक संप्रदायों में बाह्य आडम्बरों,

अंधविश्वासों, कर्मकाण्डों तथा मिथ्याचारों का बोलबाला था। ऐसी परिस्थितियों से जूझते हुए समाज ने संत रविदास की संवेदना को गहराई से प्रभावित किया, जो उनके पदों एवं रचनाओं से स्पष्ट होता है। उनकी सामाजिक चेतना निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर समझी जा सकती है-

जातिवाद एवं वर्णव्यवस्था का विरोध

संत रविदास का समाज में बदलाव लाने का तरीका कबीरदास से भिन्न है। वे कबीर की तरह आक्रामक वाणी के माध्यम से सुधार लाने की चेष्टा नहीं करते, बल्कि अपनी वाणी में अत्यंत विनम्रता से व्यक्ति के मन की उस वृत्ति का परिष्कार करना चाहते हैं, जिसके चलते कुरीतियाँ उत्पन्न होती हैं। वे जातिवाद और जन्म आधारित वर्णव्यवस्था का खंडन करते हैं। उनका मानना है कि जन्म से कोई व्यक्ति ऊँचा या नीचा नहीं होता, बल्कि उसके कार्य समाज में उसकी स्थिति का निर्धारण करते हैं। वे बार-बार स्वयं को अपनी जाति के नाम से संबोधित कर अपनी वस्तुस्थिति से मुँह नहीं मोड़ते। इस संदर्भ में उनका एक पद उल्लेखनीय है-

''जाति ओछा, पाति ओछा, ओछा जनमु हमारा।
राजा राम की सेवा न कीन्हीं, कहै रविदास चमारा।।''

इस प्रकार संत रैदास ने अपने कुल, जाति और जन्म से घृणा नहीं की, बल्कि उस पर स्वाभिमान प्रकट किया है। इन्होंने आचरण और कर्म की गरिमा की केवल बात ही नहीं की, अपितु अपना उदाहरण स्वयं प्रस्तुत किया और सामाजिक चेतना को एक नवीन दिशा दी।

आडम्बरों एवं कर्मकाण्डों का विरोध

रविदास ने तत्कालीन समाज में विद्यमान आडम्बरों एवं कर्मकाण्डों का खुलकर विरोध किया। वे मिथ्याचारी व आडम्बरों का निर्वाह करने वालों को पूर्णत: अस्वीकार करते हुए उनके जीवन को व्यर्थ व थोथा कहते हैं। माया को, पूजा करने वाले पंडित को, मंदिर आदि को निरर्थक मानते हैं तथा नाम स्मरण को ही जीवन का सार मानते हैं, जिसे उन्होंने इस दोहे के माध्यम से व्यक्त किया है-

'' थोथी काया थोथी माया, थोथा हरि बिन जनम गवाया।
थोथा पंडित थोथी बानी, थोथी हरि बिन सबै कहानी।।
थोथा मंदिर भोग बिलासा, थोथी आन देव की आसा।
साचा सुमरन नांव विसासा, मन वचन कर्म कहै रविदासा।।''

हिंदु-मुसलमानों की पूजा पद्धति पर कुठाराघात करते हुए उन्होंने कहा कि मुसलमानों द्वारा पश्चिम की ओर मुख करके नमाज पढ़ना और हिंदुओं द्वारा पूर्व की ओर मुख करके पूजा करना व्यर्थ का दिखावा मात्र है, बल्कि वास्तविकता तो यह है कि ईश्वर तो घट-घट वासी है-

''जो खुदा पश्चिम बसै, तौ पूरब बसत है राम।
रैदास सेवै जिह ठाकुर कूं, तिह का ठांव न नाम।।''

अर्थात् रैदास कह रहे हैं कि यदि खुदा पश्चिम में है तो राम पूरब दिशा में निवास करता है, किंतु मैं उस ईश्वर की पूजा करता हूँ, जिसका न तो कोई स्थान है और न ही कोई नाम है।

धार्मिक सांप्रदायिकता का खंडन

रविदास के समय हिंदू और इस्लाम दो धर्म भारत में प्रमुख थे, और दोनों धर्मों के अनुयायियों में पारस्परिक नोंक-झोंक होती रहती थी। इसी धार्मिक सांप्रदायिकता का खंडन करते हुए रविदास ने हिंदू-मुस्लिम एकता पर जोर दिया तथा दोनों धर्मों के अनुयायियों को समझाते हुए कहा कि-

''रविदास उपजह सब एक नूर तें, ब्राह्मन मुल्ला सेख।
सभी का करता एक है, सभ कूं एक ही पेख।।''

अर्थात् रविदास कहते हैं कि चाहे ब्राह्मण हो, मुल्ला हो या शेख हो, सब एक ही ईश्वर की उत्पत्ति हैं, और सभी का कर्ता-धर्ता एक ही है।

इसके अलावा, हिंदू-मुस्लिम वैमनस्य का समाधान करते हुए रविदास कहते हैं कि उन्हें न तो मस्ज़िद से कोई घृणा है और न ही मंदिर से कोई विशेष प्रेम, क्योंकि वास्तविकता यह है कि न ही मंदिर में राम हैं और न ही मस्ज़िद में खुदा, वह तो सबके अंदर है, जिसे रविदास शीश झुकाता है। निम्नलिखित पंक्तियों में उन्होंने अपने इसी भाव को व्यक्त किया है-

"रविदास न पूजइ देहरा, अरू न मस्ज़िद जाय।
जहं-तहं ईस का वास है, तहं तहं सीस नवाय।।''

जीव हत्या तथा मद्यपान का विरोध

रविदास ने समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं कुप्रथाओं, जैसे- पशु बलि, जीव हत्या, नशाखोरी आदि का मुख्य रूप से विरोध किया है। उन्होंने, जीव हत्या के संदर्भ में लिखा है कि-

"रविदास जीव कूं मारिकर, कैसे मिलहै खुदाय।
पीर पैगम्बर औलिया, कोउ न कहई समुझाय।।''

अर्थात् रविदास कहते हैं कि जीव को मार कर भला खुदा की प्राप्ति की कैसे हो सकती है, यह बात कोई भी पीर, पैगंबर या औलिया किसी को क्यों नहीं समझाता।

रविदास मद्यपान की भी मनाही करते हैं, और ईश्वर के नाम के महारस को पीने की बात करते हैं। इस संदर्भ में वे लिखते हैं-

''रविदास मदिरा का पीजिये, जो चढ़े-चढ़े उतराय।
नाव महारस पीजिये, जो चढ़ै नांहि उतराय।।''

अर्थात् वे कहते हैं कि मदिरा का सेवन करने से क्या लाभ, जिसका नशा चढ़ता है और शीघ्र ही उतर जाता है। इसकी जगह राम नाम रूपी महारस का पान करो, इसका नशा यदि एक बार चढ़ जाता है, तो फिर कभी नहीं उतरता।

सामाजिक समरसता व सौहार्द्र को बढ़ावा

रविदास ने ऐसे राज्य की परिकल्पना की थी जहाँ ऊँच-नीच का भेदभाव न हो, सभी को पेटभर भोजन मिले, सभी खुश एवं प्रसन्न हों। ऐसे राज्य से रैदास को प्रसन्नता होती है। भारतीय संस्कृति के **''सर्वेभवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः''** और महात्मा बुद्ध के **'भवतु सब्बु मंगलं'** के समान ही रविदास ने यह कामना करते हुए कहा है कि-

''ऐसा चाहौं राज में, जहाँ मिले सबन को अन्न।
छोट बड़ों सभ बसैं, रैदास रहै प्रसन्न।।''

संत रविदास के दार्शनिक विचार

कबीर के समान ही रविदास परंपरागत शास्त्रीय दर्शन के कायल न होकर स्वतंत्र विचार दृष्टि रखते हैं। रविदास मूलतः संत थे, दार्शनिक नहीं। यह बात अलग है कि उन्होंने भारत में अनेक स्थानों पर भ्रमण किया और अनेक यात्रियों, चिंतकों, साधु-फकीरों की उनसे भेंट हुई। अतः प्रसंगानुकूल उन्होंने ब्रह्म, जीव, जगत और माया के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत किये। उनके काव्य का मूल्यांकन करते हुए कई विद्वान उन्हें अद्वैतवादी, ब्रह्मवादी अथवा समन्वयवादी मानते हैं। गौरतलब है कि संत रविदास का उद्देश्य ईश्वर की सच्ची भक्ति करना था, दर्शन के दुरूह जाल में उलझना नहीं। फिर भी यहाँ पर उनके भक्ति-दर्शन को निम्नलिखित अवधारणाओं के आधार पर समझा जा सकता है-

ब्रह्म

संत रविदास अपने आरंभिक जीवन में सगुण-साकार ब्रह्म को स्वीकार करते थे, जो कि उनके आरंभिक पदों से स्पष्ट होता है। लेकिन **'श्री गुरुग्रंथ साहिब'** में उल्लिखित तथा उनकी परवर्ती प्रामाणिक रचना के आधार पर उनको जिस ब्रह्म के दर्शन होते हैं, वह मूलतः निराकार है। निराकार ब्रह्म को स्वीकार करते हुए उनका मानना है कि मंदिर-मस्ज़िद में भटकने से परमात्मा नहीं मिलता। उन्होंने उस परमात्मा को घट-घट वासी बताया है, जिसे लोग राम, कृष्ण, राघव, रहीम या अल्लाह के नाम से पुकारते हैं।

इस विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि रविदास जिस परमात्मा की भक्ति करते हैं, वह निर्गुण-निराकार रूप में है, जिसे आँखों से नहीं देखा जा सकता। उनके निम्नांकित पद में परमात्मा का निर्गुण-निराकार स्वरूप स्पष्ट होता है-

''आरती करत हँसे मन मेरो, आवत चित तुव रूप धनेरो।
अजर अमर अडोल अभेदा, निरगुन रहित रूप नहीं रेखा।।''

जीव

संत रविदास ने जीव को **निराकार ब्रह्म का ही अंश** माना है, किंतु माया जीव को सांसारिक बंधनों में फँसाए रखती है, जिस कारण वह संसार में बार-बार शरीर धारण करता है। उन्होंने जीव को **'माटी का पुतला'** बताया है, जो क्षण भर में ही नष्ट हो जाने वाला है। रविदास ने जीव की वस्तुस्थिति को समझाते हुए लिखा है कि-

''जल की भीति पवन का खंभा, रकत बूँद का मारा।
हाड़-माँस नाड़ी की पिंजरू, पंखी बसै विचारा॥
प्रानी किआ मेरा तेरा, जैसे तरवर पखि बसेरा।
राघव कंध उखारहु नींवा, साढ़े तीनि हाथ तेरी सींवा॥
बके बाल पाग सिर डेरी, इहु तनु होइगो भसम की ढेरी।''

अर्थात् यह शरीर एक पिंजरा है, जिसकी दीवारें पानी से बनी है, जिसके खंभे हवा से बने हैं और जिसमें खून गारा-मिट्टी की तरह इस्तेमाल हुआ है, इन्हीं के साथ हड्डी, माँस और नस-नाड़ियों को मिलाकर यह पिंजरा बना है, जिसमें जीव रूपी पक्षी निवास करता है। अतः उन्होंने इस देह पर घमण्ड करने वालों को सचेत करते हुए कहा है कि चाहे कितने ही ऊँचे महल बना लो, इस देह की सीमा तो साढ़े तीन हाथ है जो अंत आते ही भस्म की ढेरी हो जाएगा। अतः रविदास कहते हैं कि जीवन की सार्थकता इसी बात में है कि वह समय रहते परमात्मा की शरण में चला जाए।

जगत

संत रविदास ने जगत को एक ही ईश्वर की उपज मानते हुए कहा है कि *''उपजइ सभ इक नूर तें, ब्राह्मन मुल्ला, सेख।''* उन्होंने जगत के निर्माण में पंच तत्त्वों- जल, वायु, आकाश, अग्नि एवं पृथ्वी का संयोग बताया है, जो एक भ्रम मात्र है। सुख-संपत्ति, धन-वैभव, मान-सम्मान, राग-द्वेष ये सब जगत के रूप हैं। यह जगत उस राजा के समान है, जो सुखपूर्वक सेज पर सोया हुआ है लेकिन सपने में वह भिखारी बन जाता है। यही हालत इस जगत के लोगों की है। एक ओर **कबीर** ने जगत को **'कागद की उस पुड़िया'** के समान बताया है जो बूँद पड़ने पर ही घुल जाती है, तो वहीं दूसरी ओर रविदास ने स्थान-स्थान पर इस जगत को नश्वर और क्षणभंगुर बताया है, जिसके बारे में उन्होंने लिखा है कि-

''ऊँचे मंदर साल रसोई, एक घरी फुन रहन न होई।
इह तन ऐसा जैसे घास की टाटी, जल गयो घास रल गई माटी॥''

माया

कबीर के समान ही रविदास ने माया को **मोहिनी, महाठगिनी** माना है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि मन माया के चंगुल में फँसा हुआ है, माया ही मन को दसों दिशाओं में दौड़वाती है, जिस कारण पाँचों इंद्रियाँ स्थिर नहीं हो पातीं। इस संसार पर माया का इतना अधिक प्रभाव है कि जिसके कारण मनुष्य के चिंतन करने की क्षमता समाप्त हो जाती है। इसलिए रविदास ने मन को माया से सावधान करते हुए कहा है-

''रे मन राम नाम संभारि।
माया के भ्रमि कहाँ भूल्यो, जाहिगौ कर झारि॥
यहु माया सब थोथरी, रे भगति कौ प्रतिपारि।
कहै रविदास सतवचन गुरु कै, सो न जीअ तैं हारि॥''

अर्थात् रविदास कह रहे हैं कि हे मानव! तूँ माया के भ्रम में कहाँ भूला है, यह सब निरर्थक है। मैं तो यही कहूँगा कि ईश्वर का नाम स्मरण कर, तुझे कभी निराशा का सामना नहीं करना पड़ेगा।

इस प्रकार रविदास के भक्ति-दर्शन के विभिन्न आयामों पर चर्चा करने के उपरांत यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि रविदास ने मनुष्य की मोक्ष प्राप्ति हेतु ईश्वर-भक्ति पर विशेष बल दिया है।

संत रविदास की भक्ति-भावना के विभिन्न आयाम

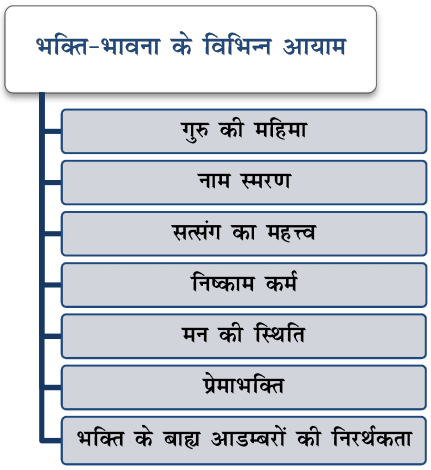

भक्तिकाल में मोक्ष प्राप्ति हेतु अनेक मार्ग एवं पद्धतियाँ प्रचलित थीं, जिनमें सगुण और निर्गुण भक्ति दो प्रमुख मार्ग थे। कबीरदास, रविदास आदि निर्गुण संतों ने इन सबकी निरर्थकता सिद्ध करते हुए निर्गुण-निराकार की भक्ति का सरल और सहज मार्ग प्रशस्त किया, जिसमें न हठयोग साधना थी, न ही धार्मिक क्रिया-कर्म, पूजा-पाठ या व्रत-उपवास का विधान। वस्तुतः निर्गुण पंथियों का यह मार्ग शुद्ध भक्ति का मार्ग था, जो **'नामभक्ति'** या **'प्रेमाभक्ति'** के रूप में प्रसिद्ध हुआ। संत रविदास की भक्ति इसी रूप में है। इनकी भक्ति को विस्तार से निम्नलिखित आयामों के माध्यम से समझा जा सकता है-

गुरु की महिमा

संत रविदास ने गुरु को अत्यंत महत्त्व दिया है। गुरु की महिमा का बखान करते हुए रविदास कहते हैं कि गुरु ही है जो सांसारिक माया जगत से शिष्य को दूर कर उसमें ज्ञान का दीपक प्रज्वलित करता है-

''गुरु ग्यान दीपक दिया, बाती दइ जलाय।
रविदास हरि भगति कारनै, जनम मरन बिलमाय॥''

अर्थात् रैदास कहते हैं कि सद्गुरु ने मुझे भक्ति रूपी बाती से मुक्त ज्ञान का दीपक प्रदान किया। परमात्मा की भक्ति के कारण ही मैं जन्म और मृत्यु के बंधन से मुक्त हो गया।

रविदास के अनुसार मनुष्य को इस भवसागर से पार कराने में गुरु की भूमिका एक पतवार के समान है, अर्थात् गुरु ईश्वर की भक्ति का मार्ग प्रशस्त करके जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा दिलाता है। गुरु की इस महत्त्वपूर्ण भूमिका के संबंध में उन्होंने लिखा है कि-

''सौ सागर दुभर अति, सिंधु मूरिख यहु जान।
रविदास गुरु पतवार है, नाम नाव करि जान॥''

नाम स्मरण

निर्गुण संत परंपरा में ईश्वर के नाम-स्मरण को भक्ति का पर्याय माना गया है। रविदास ने सदैव जिह्वा से **'ओंकार'** जप और हाथ से काम करने का उपदेश दिया है। वे कहते हैं-

''जिह्वा सों ओंकार जप, हत्थन सों कर कार।
राम मिलहि घर आइ कर, कहि रैदास विचार॥''

अर्थात् हे मनुष्य! तूँ अपनी वाणी से ओंकार का जाप और हाथों से कर्म कर। ऐसा करने पर प्रभु राम स्वयं तुझसे मिलने तेरे घर आएँगे।

इस प्रकार रविदास ने भक्ति का यह सरलतम रूप प्रायः उन लोगों के लिए प्रस्तुत किया, जो पढ़े-लिखे नहीं थे।

सत्संग का महत्त्व

मनुष्य के जीवन में संगति महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है, इसलिए विभिन्न कालखण्डों के संतों नें सत्संग के महत्त्व पर अत्यधिक बल दिया है। जो व्यक्ति उन्नति करना चाहता है, उसे ईश्वर के प्रति प्रेम और सत्संग में शरण लेनी होगी। रविदास ने अपने काव्य में दुष्टों की संगति से दूर रहने और सत्संग करने पर जोर देते हुए कहा है कि-

''जो जन दुष्ट कुमारगी, बइठहि नंहि तिंह पास।
जो जन संत सुमारगी, तिन पायं लागो रविदास॥''

अर्थात् रविदास का कहना है कि जो लोग दुष्टों की संगति करते हैं, उनके पास नहीं बैठना चाहिए, यदि जीवन में उन्नति करना है तो अच्छे लोगों की, संतों की संगति कीजिए, ऐसे संतों के मैं पैर छूता हूँ। सुसंगति के प्रभाव को स्पष्ट करते हुए रविदास कहते हैं कि गंदे नाले का पानी बहकर जब गंगा में मिलता है, तो वह गंदा पानी 'गंगा-जल' कहलाता है।

निष्काम कर्म

'श्रीमद्भगवद् गीता' की तरह ही संत रविदास ने लोगों को कर्म का संदेश दिया है। उनके अनुसार मनुष्य का धर्म है- दिन-रात कर्तव्य करते रहना। रविदास कहते हैं कि जीव को ईश्वर के निमित्त होकर सद्कर्मों में लीन रहना चाहिए, उसे फल/परिणाम की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। रविदास की निम्नलिखित पंक्तियों में उनकी कर्म संबंधी अवधारणा की पुष्टि होती है-

''सौ बरस लौं जगत मंहि, जीवत रहि करू काम।
रविदास करम ही धरम है, करम करहु निष्काम॥''

अर्थात् रैदास कहते हैं कि मनुष्य को सौ वर्ष तक जीवित रहने की इच्छा के लिए निरंतर कर्म करते रहना चाहिए। कर्म करना ही मनुष्य का धर्म है।

मन की स्थिति

मन के शांत और एकाग्र हुए बिना परमात्मा की भक्ति नहीं की जा सकती, क्योंकि मन की चंचलता भक्ति में स्थिरता नहीं आने देती। रविदास ने अपनी वाणी में मन की चंचलता का उल्लेख करते हुए कहा है कि-

''मैं का जानौं देव मैं का जानौं, मन माया के हाथ बिकानौं।
चंचल मनवां चहुं दिस धावै, पाँचों इंद्री थिर न रहावै॥''

अर्थात् रविदास कहते हैं कि मैं ईश्वर को जानने में असमर्थ हूँ, क्योंकि मेरा मन माया के हाथ बिका हुआ है, इसलिए मेरा मन सांसारिक बंधनों और विषय वासनाओं में फँसा हुआ है। मेरा यह चंचल मन चारों दिशाओं में भागता रहता है, और पाँचों इंद्रियाँ भी स्थिर नहीं रहतीं।

प्रेमाभक्ति

जब कोई भक्त सभी प्रकार के सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर अनन्य रूप से परमात्मा के प्रेम में लीन हो जाता है तो ऐसी भक्ति प्रेमाभक्ति कहलाती है। परमात्मा के साथ अपने अनन्य प्रेम को रविदास इन पंक्तियों के माध्यम से स्पष्ट करते हैं-

''ससि चकोर, सूरज कंवल, चात्रिक घन की रीति।
रविदास इवि मुहि राखिओं, हित चित पूण परीति॥''

अर्थात् रविदास कहते हैं कि भले ही ईश्वर के अनेक भक्त हों, किंतु उनके लिए तो परमात्मा ही अकेले प्रीतम हैं। अपने प्रीतम के दर्शन के लिए रविदास की आँखें उसी तरह तरसती हैं जिस तरह कोयल आम की मंजरी के लिए तथा पपीहा स्वाति नक्षत्र की बूँद के लिए तरसता है।

रविदास ने ईश्वर भक्ति के महत्त्व को बताते हुए कहा है कि भगवद् प्रेमामृत की एक बूँद भी भक्त पा लेता है तो उसके जन्म-जन्मांतर की प्यास बुझ जाती है तथा वह इस भव-सागर को पार कर जाता है। यही भावार्थ उनके निम्नलिखित दोहे में व्यक्त हुआ है-

''इक बूँद सो बुझि गई, जनम जनम की प्यास।
जनम मरन बंधन टूटई, भये रविदास खलास॥''

इस प्रकार रविदास के विभिन्न पदों में प्रेमाभक्ति का जो स्वरूप मिलता है, उससे स्पष्ट होता है कि उन्होंने सर्व समर्पण भाव से स्वयं को परमात्मा में लीन कर उनके चरण कमलों में न्यौछावर कर दिया था। उनके अनुसार भगवद् प्राप्ति का एकमात्र रास्ता प्रेमाभक्ति ही है जो मनुष्य के विविध तापों एवं सभी संतापों को दूर करती है।

भक्ति के बाह्य आडम्बरों की निरर्थकता

भक्तिकालीन निर्गुण संतों ने बहिर्मुखी साधनाओं और कर्मकाण्डों को भक्ति के लिए अवरोध बताया है। रविदास ने देवी-देवताओं की पूजा करना, सिर मुड़वाना, यज्ञ-हवन करना, जप-तप करना, शरीर को जल या अग्नि को समर्पित कर देना आदि इन सभी को बाह्य आडम्बर मानकर एक भ्रम माना है। इसलिए उन्होंने कबीर की तरह मंदिर-मस्ज़िद में शीश झुकाने की अपेक्षा घट-घट व्यापी परमेश्वर में लीन होने पर जोर देते हुए कहा है-

''देहरा अरू मसीत मंहि, रविदास न सीस नवाय।
जिह लौं सीस निवावना, सो ठाकुर सभ थांय॥''

अर्थात् रविदास कहते हैं कि मैं मंदिर-मस्ज़िद में सिर नहीं झुकाता, मैं तो उस ईश्वर के आगे सिर झुकाता हूँ जो घट-घट में व्याप्त है।

संत रविदास के नैतिक विचार

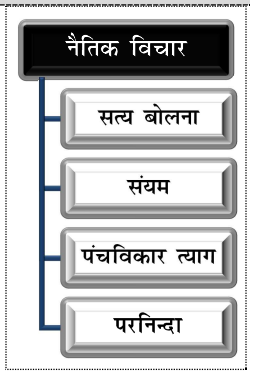

संतों की वाणी नैतिकता का संदर्भ ग्रंथ मानी जाती है। संत रविदास की वाणी एवं प्रत्येक पद में प्रायः नैतिक मूल्यों का उल्लेख मिलता है। उन्होंने जिन मूल्यों को अपने नैतिक दर्शन में अधिक महत्त्व दिया, वे इस प्रकार हैं-

सत्य बोलना

संत रविदास के पदों में सत्य को ईश्वर के समतुल्य माना गया है तथा प्रत्येक व्यक्ति को सत्य बोलने का उपदेश दिया गया है। उन्होंने असत्य भाषण को पाप के समतुल्य माना है। उनकी दृष्टि में सत्य की शक्ति अप्रतिहत (अटूट) है, और अंततः सत्य की ही जीत होती है। असत्य क्षणिक लाभ देकर पुनः वास्तविकता को नहीं छुपा सकता, जैसे- सूर्य के प्रकाश को बादल थोड़ी देर तक ही रोक सकते हैं, परंतु दीर्घकाल तक नहीं। उन्होंने लिखा है-

''सत ईष कहुं रूप है, सत शक्ति अनन्त अपार।
रविदास संत कं धारणा, देहहिं पाप निवार।।''

संयम

रविदास पर अन्य संतों की भाँति नाथों, सिद्धों का भी थोड़ा-बहुत प्रभाव परोक्ष रूप से दिखाई देता है। इंद्रियों पर नियंत्रण करते हुए इस संसार में संयमित रहकर व्यवहार करने की सलाह रविदास के अनेक पदों में मिलती है। इसी संदर्भ में उनका पद है-

''जन रविदास राम नित भेटहिं, रहि संजम जागति पहरा रें।''

पंचविकार त्याग

संतों का संपूर्ण दर्शन काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को मनुष्य का शत्रु मानता है। भारतीय दर्शन में पंच दोष विकार के परित्याग का विस्तृत वर्णन मिलता है। अद्वैत वेदांत के एक श्लोक का अक्षरशः अनुवाद संत रविदास वाणी में मिलता है, इस संदर्भ में रविदास ने लिखा है कि-

''मृग मीन भ्रिंग पतंग कुंजर, एक दोष विनास।
पंच दोष असाध जा महिं, ताकी केतक आस।।''

अर्थात् रविदास कहते हैं कि मृग (हिरण), मीन (मछली), भ्रिंग (भ्रमर), पतंग (पतंगा) और कुंजर (हाथी) उपर्युक्त पाँच दोषों में से मात्र एक दोष के कारण नष्ट हो जाते हैं, जबकि मनुष्य में तो एक ही जगह पाँचों विकार उपस्थित होते हैं, ऐसे में मनुष्य की क्या स्थिति होगी?

परनिन्दा

परनिन्दा भारतीय दर्शन में पाप तुल्य मानी गई है। संत रविदास वाणी में परनिन्दक को नरक वासी होने की सजा का उल्लेख है। उन्होंने परनिन्दक की भर्त्सना करते हुए इस बुराई से बचने का उपदेश दिया है। वे लिखते हैं-

''साध का निन्दुक कैसे तिरे, सिर पर जानहु नरक ही परै।
परनिन्दा सम नहीं अधमाई, कहि रविदास मुनि सब गाई।''

संत रविदास के विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता

संत रविदास के समाज, दर्शन, नैतिकता संबंधी विचार मध्यकाल से लेकर वर्तमान तक प्रत्येक कालखण्ड में प्रासंगिक रहे हैं। उनके विचारों की प्रासंगिकता को निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर सिद्ध किया जा सकता है-

- **समाज संबंधी विचारों की प्रासंगिकता**- रविदास ने जातिवाद एवं वर्णव्यवस्था का विरोध किया। उनके इस विरोध की प्रासंगिकता इसलिए है, क्योंकि वर्तमान के भूमण्डलीकृत समाज में जाति और वर्ण जैसी व्यवस्थाएँ अतार्किक और अप्रासंगिक प्रतीत होती हैं।

  संत रविदास ने आडम्बरों एवं कर्मकाण्डों का विरोध, धार्मिक सांप्रदायिकता का खंडन, जीव हत्या तथा मद्यपान का विरोध किया। उनका यह विरोध वर्तमान में तर्कसंगत है, क्योंकि धार्मिक सांप्रदायिकता फैलाने से समाज में अस्थिरता आएगी और जीव हत्या एवं मद्यपान करने से समाज की नैतिक उन्नति अवरुद्ध होगी।

- **दार्शनिक विचारों की प्रासंगिकता**- संत रविदास का भक्ति-दर्शन ब्रह्म, जीव, जगत और माया जैसे आयामों पर आधारित है। उन्होंने ब्रह्म को निराकार, जीव और जगत को क्षणभंगुर तथा माया को महाठगिनी माना है। उनकी भक्ति संबंधी विचारधारा की प्रासंगिकता इस बात से सिद्ध होती है कि वर्तमान में अधिकांश लोग भौतिकवादी जीवनशैली का निर्वहन कर रहे हैं और यदि भक्ति साधना करते भी हैं तो बाह्य आडंबर युक्त भक्ति को प्राथमिकता देते हैं, जबकि सत्य यही है कि व्यक्ति खाली हाथ जन्म लेता है और मृत्यु के बाद भी खाली हाथ ही रह जाता है, क्योंकि सांसारिक मोह-माया एक भ्रम मात्र है, इसके अलावा कुछ नहीं।
- **नैतिक विचारों की प्रासंगिकता**- संत रविदास के नैतिक विचार वर्तमान समाज के लिए अनुकरणीय हैं। उन्होंने सत्य बोलने, संयम रखने, दूसरों की निंदा नहीं करने, पंचविकार का त्याग करने जैसे नैतिक विचार दिए हैं।

रविदासिया समुदाय

- रविदासिया मूलतः एक **दलित समुदाय** है जो पंजाब और उसके आस-पास के राज्यों में दोआब क्षेत्र में निवास करता है।
- इस समुदाय को बाबा संत पीपल दास द्वारा 20वीं शताब्दी की शुरुआत में स्थापित किया गया था।
- **'डेरा सचखंड बल्लन'** उनका सबसे बड़ा डेरा है।
- इस समुदाय के अनुयायियों को संत रविदास के विचार बहुत प्रभावित करते हैं और वे जाति, पंथ या लिंग की परवाह किए बिना समानता के सिद्धांत में विश्वास करते हैं।

स्मरणीय तथ्य

संत रविदास की सामाजिक चेतना

- जाति एवं वर्ण व्यवस्था का विरोध।
- आडम्बरों एवं कर्मकाण्डों का विरोध।
- धार्मिक सांप्रदायिकता का खंडन।
- जीव हत्या तथा मद्यपान का विरोध।
- सामाजिक समरसता व सौहार्द्र को बढ़ावा।

संत रविदास के दार्शनिक विचार

- **ब्रह्म**- निर्गुण-निराकार ब्रह्म को स्वीकार।
- **जीव**- निराकार ब्रह्म का ही अंश, माटी का पुतला।
- **जगत**- पंच तत्त्वों से निर्मित- जल, वायु, आकाश, अग्नि एवं पृथ्वी। सुख-संपत्ति, धन-वैभव, मान-सम्मान, राग-द्वेष जगत के रूप हैं, जो एक भ्रम है।
- **माया**- रविदास ने माया को मोहिनी, महाठगिनी माना।

संत रविदास की भावना के विभिन्न आयाम

- **गुरु की महिमा**- शिष्य को सांसारिक जगत से मुक्ति दिलाने वाला।
- **नाम स्मरण**- भक्ति का पर्याय, जिह्वा से 'ओंकार' जपने एवं हाथ से काम करने का उपदेश।
- **सत्संग का महत्त्व**- व्यक्ति की उन्नति का माध्यम।
- **निष्काम कर्म**- जीव को ईश्वर के निमित्त होकर सद्कर्मों में लीन रहना चाहिए।
- **मन की स्थिति**- मन विषय-वासनाओं में लिप्त है; शांत एवं एकाग्र मन को प्राथमिकता दी।
- **प्रेमाभक्ति**- सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर पूर्णसमर्पण भाव से ईश्वर की भक्ति में लीन होना।
- भक्ति के बाह्य आडम्बरों को निरर्थक बताया।

संत रविदास के नैतिक विचार

- सत्य बोलना चाहिए।
- संयम धारण करना चाहिए।
- पंचविकारों का त्याग- काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार।
- परनिन्दा नहीं करना चाहिए।

संत रविदास के विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता

- **सामाजिक विचारों की प्रासंगिकता**- वर्तमान के भूमंडलीकृत समाज में जाति एवं वर्णव्यवस्था अप्रासंगिक। धार्मिक सांप्रदायिकता, बाह्य आडम्बर, जीव हत्या आदि आदर्श समाज के लक्षणों के विपरीत हैं।
- **दार्शनिक विचारों की प्रासंगिकता**- वर्तमान की भौतिकतावादी जीवनशैली में साकार ईश्वर की पूजा अतार्किक, माया-महाठगिनी, जगत-क्षणभंगुर है।
- **नैतिक विचारों की प्रासंगिकता**- सत्य बोलने, संयम रखने, परनिन्दा, पंचविकार त्यागने जैसे नैतिक विचार दिये, जो वर्तमान में प्रासंगिक हैं।

रविदासिया समुदाय

- दलित समुदाय।
- **स्थित**- पंजाब एवं आस-पास के क्षेत्रों में।
- सबसे बड़ा डेरा- 'डेरा सचखंड बल्लन'।
- संत रविदास के विचारों से अत्यंत प्रभावित।

संत रविदास की रचनाएँ

- **रविदास की बानी**- गुरुग्रंथ साहिब में संकलित उनके भजनों एवं पदों का संग्रह।
- **रविदास की वाणी**- भक्ति एवं समाज संबंधी उपदेश संकलित।
- **संत रविदास के पद**- भक्ति एवं सुधारवादी (नैतिक) दृष्टिकोण का वर्णन।

संत रविदास की रचनाओं की भाषा

- मुख्यत: ब्रज भाषा, किंतु कुछ पद अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली, उर्दू एवं फारसी में भी रचे गए।

प्रेमाभक्ति

- जब कोई भक्त सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर अनन्य भाव से परमात्मा की भक्ति करता है, तो यही भक्ति 'प्रेमाभक्ति' कहलाती है।

संभावित प्रश्न

1. अति लघु-उत्तरीय प्रश्न

- रविदास
- रविदास की प्रेमाभक्ति
- रविदास की किन्हीं दो रचनाओं के नाम एवं उनकी विषय-वस्तु लिखिए।
- रविदास किस काल के कवि हैं?
- रविदास के नैतिक विचार
- रविदास ने माया को किस रूप में स्वीकार किया है?
- रविदास के ब्रह्म संबंधी विचार।
- रविदास जगत को किस रूप में मानते हैं?
- समाज सुधारक रविदास।
- रविदास की भक्ति-भावना के आयाम।
- रविदासिया समुदाय

2. लघु-उत्तरीय प्रश्न

- रविदास के जाति एवं वर्णव्यवस्था संबंधी विचारों को स्पष्ट कीजिए।
- संत रविदास का जीवन परिचय लिखिए।
- संत रविदास के नैतिक विचारों की व्याख्या कीजिए।
- संत रविदास के ब्रह्म एवं जीव संबंधी विचारों को स्पष्ट कीजिए।
- संत रविदास ने गुरु की महिमा महत्त्व का वर्णन किस रूप में किया है?
- संत रविदास की 'प्रेमाभक्ति' को स्पष्ट कीजिए।
- प्रेमाभक्ति पर टिप्पणी लिखिए।
- संत रविदास के विचार क्या वर्तमान में भी प्रासंगिक हैं?
- संत रविदास के सामाजिक विचारों को स्पष्ट कीजिए।
- रविदासिया समुदाय पर टिप्पणी लिखिए।

3. दीर्घ-उत्तरीय प्रश्न

- संत रविदास का भक्ति-दर्शन स्पष्ट कीजिए।
- संत रविदास को आप भक्त मानते हैं या समाजसुधारक? अपने मत के समर्थन में तर्क दीजिए।
- 'सामाजिक चेतना के रूप में रविदास की प्रतिक्रिया भले ही कबीर जितनी प्रखर न हो, किंतु उसकी प्रभाव क्षमता कबीर से कम नहीं।' इस संदर्भ में रविदास की सामाजिक चेतना को स्पष्ट कीजिए।
- वर्तमान युग में रविदास के जीवन-दर्शन की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।